International Journal of Engineering Research & Management Technology
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) ISSN: 2348-4039
Volume 11, Issue-2 March-April- 2024 Impact Factor: 7.09
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

"शिक्षक–प्रशिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन की आवश्यकता"

डॉ. सुधा शर्मा

प्राचार्या,श्री अग्रसेन शिक्षक–प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, भरतपुर

सारांशः– शिक्षा वह जो हमसे हमारा परिचय कराये हमारा व्यक्तित्व निखारे हमारे गुरूर को तरासे और सबसे महत्वपूर्ण हमारे सोचने समझने की क्षमता को विकसित करें शिक्षा का केन्द्र अध्यापक है और अध्यापक की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिम्बित होती है। कोठारी आयोग के अनुसार सर्वोत्तम प्रकार की शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाऐं शिक्षा के विषय में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है अतः शिक्षक शिक्षा की समीक्षा आवश्यक है। विद्यालय शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता लाना आवश्यक है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन की आवश्यकता है। इस प्रकार इस शोध पत्र के अध्ययन द्वारा यह समझा जा सकता हैं कि वर्तमान में संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुछ संशोधन द्वारा शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता लाई जा सकती है। जिससे केवल शिक्षा का क्षेत्र उच्च नहीं अपितु शिक्षक का भी गुणात्मक विकास होगा।

प्रस्तावना :–

शिक्षा वह है जो हमसे हमारा परिचय कराये हमारा व्यक्तित्व निखारे और हमारे गुरूर को तरासे और सबसे महत्वपूर्ण हमारे सोचने समझने की क्षमता को विकसित करें। शिक्षा सप्रयोज सचेष्ट तथा अविरल गतिशील प्रक्रिया है जो हर पल स्थिति में व्यक्ति के विकास को अन्जाम देती है। शिक्षा सामाजिक विकास की आधारशिला है और शिक्षा के केन्द्र में शिक्षक छात्र की गतिशीलता है शिक्षा का केन्द्र अध्यापक है और अध्यापक की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिम्बित होती है। वर्तमान समय में शिक्षक की जिम्मेदारी केवल शैक्षिक प्रतिमान के विस्तार के परिणाम स्वरूप केवल ज्ञान प्रसारित करने तक ही सीमित नहीं रही है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक स्वयं सुविधा प्रदाता संरक्षक और महत्वणूर्ण रूप से शिक्षार्क्षी हैं छात्रों के सीखने को बढावा देने में शिक्षक की प्रतिभा, कौशलता और तैयारी का महत्व इन बदलती अपेक्षाओं के बीच महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरते है।

कोठारी आयोग के अनुसार सर्वोत्तम की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाए शिक्षा के विकास में प्रकार महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है अतः शिक्षक–प्रशिक्षण या शिक्षक–शिक्षा की समीक्षा आवश्यक है। विद्यालयी शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षक–शिक्षा प्रक्रिया में गुणवत्ता लाना अनिवार्य है।

''शिक्षक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो भावी शिक्षक को एक कुशल योग्य एवं सफल शिक्षक बनाने के लिए प्रदान की जाती है।'' देश में शि. प्रशि. हेतु लगभग 19542 संस्थाएँ है जिनमें 25826 पाठ्यक्रम संचालित है जिनमें प्रतिवर्ष 150000000 प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

वर्तमान समय में देश में एक बडे पैमान पर शिक्षक–प्रशिक्षण हेतु ढांचा विद्यमान है जिनमेंबडी मात्रा में कुशल शिक्षक तैयार किये जाते है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम एक ऐसी व्यवस्था है जो की जरूरतो के अनुसार शिक्षकों को निरन्तर प्रशिक्षित करने का कार्य करते रहे है जिसमें शिक्षा को मात्र सूचना हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया में देखा जाता है और सीखने का अर्थ पाठ्य पुस्तकों से हटकर जैसे का तैसा बोलना ओर लिख लेना लगाया जाता है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम का खाका ओर दस्तूर कुछ पूर्व निर्धारित मान्यताओं पर आधारित है जो शिक्षक के विचारों तथा पेशेवर एवं व्यक्तिगत विकास को बाधित कर रहा है। इसलिए इन शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणतत्ता लाने के लिए निम्नलिखित परिवर्तन आपेक्षित है जो विद्यालयी शिक्षा में गुणवत्ता लाने में भी मील का पत्थर साबित होगा।

अध्यापक में आपेक्षित परिवर्तन :–

(1) छात्राध्यापको के प्रवेश की समस्या–वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा में प्रवेश राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है परन्तु परीक्षा का स्तर बहुत ही निम्न स्तर का है तथा शिक्षण संस्थाओं की अधिकता है जिससे जो छात्र प्रवेश पाते है शैक्षणिक योग्यता की दृष्टि से हीन होते है और उन्हे रोजगार नही मिल पाता इससे शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। अतः शिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश समबन्धी परीक्षा के स्तर में सुधार/परिवर्तन की आवश्यकता है इस प्रकार अध्यापक शिक्षा में प्रवेश की समस्या एक विकट रूप में शिक्षा विभागों के सम्मुख एक बाधा बनी रहती है। अतः प्रवेश संबंधी नियम कडे किये जायें तथा बुद्धि परीक्षा एवं सामान्य आदि के द्वारा चयन कार्य सम्पन्न किया जाना चाहिए।

(2) अनुपयुक्त पाठयक्रम–शिक्षक शिक्षा संस्थाओं का पाठ्यक्रम अत्यन्त संकुचित, निर्जीव एवं पुराना है प्रशिक्षण काल में सैद्धान्तिक पक्ष को अधिक महत्व दिया जाता है और अभ्यासात्माक पक्ष उपेक्षित रहता है। प्रशिक्षण काल में छात्राध्यापक की रूचियों, अभिरूचियों, दृष्टिकोणो, कल्पना शविन्त, सृजनशीलता, नेतृत्व आदि को परिमर्जित करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता सदियों से चली आ रही घिसी–पिटी पाठयोजना तेया करवाकर उसका अक्षरसः पालन किया जाता है शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता लेने की लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत होती है। जिससे प्रशिक्षण काल में प्राप्त ज्ञान का अध्यापक गण वास्तविक जीवन में प्रयोग कर अपने प्रशिक्षण को प्रभावी बना सके। अध्यापक शिक्षा संस्थाओं का पाठयक्रम अत्यनत संकुचित, निर्जीव एवं पुराना हैं प्रशिक्षण की अवधि में सैद्धान्तिक पक्ष पर ज्यादा जोर दिया जाता हैं और अभ्यासात्मक पक्ष उपेक्षित रहता है। छात्रों की रूचियों, अभिरूचियों, दृष्टिकोणों, कल्पना शक्ति, सृजनशीलता, नेतृत्व आदि को परिमार्जित करने पर भी कोई ध्यान नहीं रहता है। पाठयोजना की घिसी–पीटी परिपाटी अपनाई जाती है एवं उसके अक्षरतसः पालन करने की अपेक्षा की जाती है।

प्रशिक्षण पाठयक्रम में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत होती है। जिससे प्रशिक्षण काल में प्राप्त ज्ञान का अध्यापक गण वास्तविक जीवन में प्रयोग करें एवं अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाये।

(3) सुयोग्य एवं अनुभवी अध्यापकों का अभाव—देश में संचालित अधिकांश शिक्षण—प्रशिक्षण संस्थाए निजी हाथों में होने के कारण इनमें प्रयुक्त अधिकांश अध्यापक शैक्षणिक योग्यता, रूचि व अभिवृति तथा अनुभव की दृष्टि से अयोग्य है जिसके परिणाम स्वरूप अध्यापक शिक्षा सम्बन्धी कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं किया जाता अतः प्रशिक्षण कार्य एक खाना पूर्ति बनकर रह जाता है अतः आवश्यक है कि इन प्रशिक्षण संस्थानों में योग्य एवं कुशल अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए। हमारे शिक्षा विभागों में ज्यादातर अध्यापक शैक्षणिक योग्यता, रूचि व अभिवृति तथा अनुभव की दृष्टि से अनुप्रयुक्त हैं इसके फलस्वरूप अध्यापक शिक्षा संबधी कार्यो को सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं किया जाता है एवं सिर्फ उनकी खाना—पूर्ति हो ही की जाती है। अतः इस समस्या का निराकरण करना आवश्यक है।

(4) अच्छे शोध कार्य का अभावः—वैसे तो अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में भारत में किये गये अनुसंधान कार्यो की विशाल श्रृंखला है। लेकिन अच्छे अनुसंधान कार्य का अभाव सा प्रतीत होता है। भारत वर्ष में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में किया जाने वाला शोध कार्य अभी भी अपनी शैशवावस्था में प्रतीत होता हैं विदेशों विशेषकर ब्रिटेन एवं अमेरिका में किये जाने वाले अनुसंधानों को भारतीय परिस्थितियों में दोहराना भारतीय शैक्षिक अनुसंधान कर्ताओं को प्रिय विषय रहा हैं नितानत मौलिक अनुसंधानों को तो भारत में अभाव रहा है। खेद का विषय है कि शिक्षा की स्नातकोत्तर व अनुसंधान उपाधियों से युक्त तथाकथित महान प्रोफेसरगण शिक्षा को कोई नितान्त मौलिक बात नहीं दे पाये है। आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय परिवेश को ध्यान में रखकर शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान किये जायें ताकि सामान्य शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा दोनों की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

(5) मानवीय मूल्यों की अवहेलना— प्रशिक्षण में केवल उद्देश्य, विधियों आदि पर इतना बल दिया जाता है कि छात्राध्यापक अपने विचारों, मूल्यों आदि पर ध्यान नहीं देते। इससे उनमें मौलिक चिन्तन का ह्रास होने लगता हैं इसी कारण वह अपनी छोटी—छोटी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को सुलझानें में असमर्थ रहते है। अतः अध्यापक शिक्षा में मानवीय मूल्यों एवं आवश्यकताओं को भी ध्यान रखना आवश्यक है।

(6) सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक बल— प्रशिक्षण की अवधि में सिद्धानत को ज्यादा महत्व दिया जाता हैं कुछ शिक्षा विभागों व प्रशिक्षण संस्थाओं में तो शिक्षाणाभ्यास केवल दो सप्ताह में पूरा कर दिया जाता है और इसको सिर्फ औपचारिक क्रिया मात्र समझा जाता है। अतः शिक्षा के व्यावाहरिक पक्ष की पूर्णरूप से अवहेलना की जाती है।। यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि हमारे शिक्षा विभागों के अध्यापक भी इस समस्या की तरफ ध्यान हीं देते है।

(7) स्वतन्त्र वातावरण का अभाव— शिक्षा विभागों एवं प्रशिक्षण विद्यालयों में आज भी छात्राध्यापकों को स्वतन्त्र वातावरण प्रदान नहीं किया जाता हे। छात्र प्रायः चापलूसी करते रहते हैं तथा अध्यापक श्रेणी के भय से उनहे डराते रहते है। यह समस्या लगातार बल पकडती जा रही है।

(8) पृथकता की समस्या– यह समस्या अध्यापक शिक्षा में तीन रूपों में व्याप्त हैं प्रथम विश्वविद्यालय एवं कॉलेज के अन्य विभागों में पृथकता, दूसरे शिक्षा विभागों का माध्यमिक स्कूलों से अलगाव, तीसरा प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्राथमिक व माध्यमिक स्तरों परस्पर सहयोग का अभाव पाया जाता है। इससे एक विभाग के अध्यापक दूसरे स्तर के अध्यापकों को है, दृष्टि से दखने लगते है। यह अध्यापक शिक्षा हेतु बहुत अहितकर हैं कोठारी आयोग ने इस समस्या को हल करने हेतु जोदार सिफारिश की है।

(9) व्यावसायिक प्रशिक्षण में सुधार की समस्या– शिक्षा विभागों के शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता में कमी होने से शिक्षा का स्तर निरन्तर गिर रहा हैं साथ ही साथ शिक्षण में प्रचलित कार्यक्रमों पर जोर दिया जाता हैं वे अत्यन्त परम्परागत एवं रूढिबद्ध है। अतः व्यावसायिक शिक्षण को सजीव बनाना आवश्यक है।

नई राष्ट्रीय शिक्षानिति– 2020 के माध्यम से शिक्षक शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण बदलाव

किसी भी देश के विद्यार्थियों का भविष्य उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस तथ्य को विज्ञान–सम्मत शोध व जनमान्य दोनो का समर्थन प्राप्त है। दुर्भाग्य से भारत में विद्यालयी व उच्च शिक्षा दोनो के शिक्षकों की गुणवत्ता पर लगातार प्रश्न चिन्ह लगते रहे है। ऐसे में यह निवार्य हो जाता है कि हम अपने सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को ने केवल शिक्षक बनने के लिए आमंत्रित करें, वरन उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण भी दें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहती है कि ''हमारे छात्रों और हमारे राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम संभव भविष्य सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों की प्रेरणा और सशक्तिकरण की आवश्यकता है।'' इस संदर्भ में शिक्षा नीति स्वीकारती है कि शिक्षक शिक्षा की गुणवक्ता वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए और परिणामस्वरूप शिक्षकों की गुणवत्ता वाछित मानकों को प्राप्त नहीं कर पा रही है। ऐसे में जनमानस द्वारा यह प्रश्न पूछना स्वाभाविक है कि ''शिक्षक शिक्षा में क्या बदलाव चाहती है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020''

- इस नीति में शिक्षक शिक्षा मे पहला बड़ा बदलाव शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जगह इस नीति में तीन कार्यक्रमों की अवधि व प्रकृति को लेकर है। वर्तमान में चल रहे 17 शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की चर्चा की गयी है। पहला–चार वर्षीय एकीकृत बी0एड0 कार्यक्रम, दूसरा– द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम। तीसरा कार्यक्रम एक वर्षीय बी0एड0 होगा, जिसमें विषय विशेष में 4 वर्ष की स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को प्रवेश ले सकेंगें।
- शिक्षक शिक्षा में इंगित दूसरा बडा बदलाव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने वाली संस्थाओं की प्रकृति से है।
- शिक्षक शिक्षा को केवल बहु–विषयक संस्थानों में हीं संचालित किया जाना चाहिए। इस मंतव्य के दृष्टिगत यह नीति वर्ष 2030 तक सभी एकल शिक्षक शिक्षा संस्थानों को बहु–विषयक संस्थानों की गुणवत्ता की ओर से अग्रसर होने के लिय यह नीति एक वर्ष का समय देती है। एक वर्ष के समय के उपरान्त भी सुधार न करने वाले संस्थानों के खिलाफ यह नीति कठोर कार्यवाही की अनुशंसा भी करती है।
- शिक्षक–शिक्षा को लेकर इस नीति में तीसरा बडा बदलाव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश व पाठ्यचर्चा को लेकर नजर आता है। यह नीति शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों समाजशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान, प्रांरभिक, बाल्यावस्था शिक्षा, बुनियादी साक्षरता ओर संख्या ज्ञान, भारत से जुडे ज्ञान और इसके

मूल्यों/लोचार/कला/परंपराऐ'' आदि के समावेश पर ल देती है। इस नीति में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भी सुध जी गई है। नीति में सेवारत शिक्षकों तथा विद्यालयों के प्रधानाचार्यो दोनो से प्रत्येक वर्ष में 50 घण्टे के सतत् व्यवसायिक विकास (सीपीडी) कार्यक्रमों में भाग लेने की अपेक्षा की गयी है।

- नीति में पाचवाँ बड़ा बदलाव शिक्षा की नियामक संस्था ''राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिद'' की भूमिका को लेकर है। यह नीति ''एन0सी0टी0ई0'' की रेगुलेटरी पावर को राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विनियामक परिषद (एन0एच0ई0आर0सी0) को सौंपने की सिफारिश करती है।
- नीति में छठा बदलाव विशिष्ट शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को शिखक शिक्षा के विमर्श के दायरे में लाया जाना विद्यालयी शिक्षा में दिव्यांग व सीखने में कठिनाई वाले विद्यार्थियों की शिक्षा हेतु यह नीति सामान्य शिक्षकों को विशेष शिक्षकों के रूप में तैयार करने पर बल देती है। इस नीति में वर्ष 2005 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाती के माध्यम से कम से कम 500 विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा का अनुभव'' का लक्ष्य रखा गया है। व्यावसायिक शिक्षा के शिक्षकों के प्रशिक्षण की प्रांसगिकता भी स्वीकारती है।

शिक्षक शिक्षा के संबंध में शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाये गये यह सभी बदलाव स्वागत योग्य हैं अतः शिक्षा नीति में सुझाये गये बदलावों के आलोक में नीति नियन्ताओं का अगला पड़ाव ''शिक्षक शिक्षा संबंधी नीति के क्रियान्वयन के तात्कालिक, मध्यावधि व दीर्घकालिक लक्ष्य तय करना तथा उन्हें प्राप्त करने के तरीकों का स्पष्ट किया जाना चाहिए।

अतः अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की आधार कूंजी है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के माध्यम से ही हम विद्यालयों में विद्यार्थियों तक प्रभावी रूप से पहुँच सकते है। एवं अपने कक्षाओं को रोचक, नवाचारी एवं आलोचनात्मक चिंतन का केन्द्र बना सकते है।

संदर्भ सूची

- डॉ0 जी0सी0 भट्टाचार्य– अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2003
- गुप्ता, डॉ0 एस0पी0 भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1995
- करिकुलम फ्रेमवर्क कार टीचर एजुकेशन : डिसकशन डाक्यूमेंट (1996) एन0टी0टी0ई0, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- भ्पदकप दमेूतववउ चवेजण् ब्बउरू लेखक पंकज अरोड़ा, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- फनवतीपुनवतंण्बवउ
- आचार्य, विजय, नवाचारों का वर्गीकरण, उपयोगिता तथा उन्हे प्रभावित करने वाली कारक एवं कठिनाईयों
- अरोरा, संतोष, इन्फोरमेशन टेक्नॉलोजी एण्ड टीचर एज्यूकेशन।
- जैन, शुद्धात्मप्रकाशः नवाचार के युग के शिक्षक कैसे हो।
- जोहरी, दिप्तीः आईसीटी यूजेज, पेटर्न एमंग टीचर ट्रेनिंग।
- कासम, हसीना : सूचना प्रौद्योगिकी से शिक्षण में सहयोग।

- श्रीमाली, ललित : भूमण्डलीकरण और अध्यापक शिक्षा।
- अग्निहोत्री रविन्द्र : ''आधुनिक भारतीय शिक्षाः समस्याएँ और समाधान'' राज0 अकादमिक ग्रंथ जयुपर
- राष्ट्रीय, शिक्षा, नीति 2020: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
- एन.सी.ई.आर.टी (2005)